हैं। वह कोई भिन्न है? वेदन यानी वेदन करनेवाला भिन्न और द्रव्य भिन्न रह गया, ऐसा कुछ है? अनादिथी वेदन नहीं है। पर्याय प्रगट हो यानी वेदन होता है लेकिन वेदन करनेवाली पर्याय भिन्न और द्रव्य भिन्न रह गया। राग की पर्याय हो तो राग की पर्याय हुई, लेकिन रागरूप आत्मा परिणमित होता है ऐसा भी कहते हैं। राग आत्माने किया, क्रोध आत्माने किया ऐसा भी कहते हैं। राग पर्यायने किया, क्रोध पर्यायने किया, ऐसे स्वयं उसका आश्रय है, आत्मा कोई भिन्न लटकता नहीं। जैसे पर्याय लटकती नहीं, वैसे पर्यायसे बिलकूल अलग नहीं रहता, द्रव्य बिलकूल भिन्न नहीं रह जाता।

प्रश्न :- जैसे सुख-दुःख का वेदन होता है वैसे ज्ञान का वेदन (होता है)?

समाधान :- जैसे सुख-दुःख का वेदन होता है वैसे ज्ञान का भी वेदन होता है। ज्ञान उसकी अपक्षासे, ज्ञान ज्ञानरूपसे जाननेरूप उसका वेदन है। ज्ञान का वेदन प्रगट हो तब होता है। अनादिसे उसको कोई ज्ञान का वेदन नहीं है। ज्ञायक ज्ञायकरूप परिणमित हुआ। ज्ञायक ज्ञातारूप उसका वेदन है। प्रगट हो तब। बिना प्रगट हुए उसका कहाँ वेदन है? ज्ञाता स्वयं ज्ञातारूप परिणमे तो उसे ज्ञाता ही हूँ, वह वेदन अलग है। सुख का वेदन वह तो राग का है, सुख-दुःख का (वेदन) है वह तो राग का है। आचार्यदेवने करुणा करके कहा कि आबालगोपाल सभी भगवानरूप परिणमित हो रहे हैं, तो सब तर्क उठते हैं।

प्रश्न :- शास्त्र में ऐसे कथन आते हैं, इसलिये..

समाधान :- आबालगोपाल सभी ज्ञानरूप हो ही रहे हैं, तू देखे, तू स्वयं ही है। देख तो सही, ऐसा कहते हैं। आबालगोपाल हो ही रहे हैं तो क्यों अनुभव में नहीं आता? लेकिन आचार्यदेव कहते हैं कि तू ज्ञानस्वरूप हो रहा है। तू तेरे पास है, तू क्यों नहीं देखता? ऐसा कहते हैं, उनका कहने का आशय यह है।

..अनुभव में आ रहा है यानी प्रगट अनुभूति हो रही है ऐसा नहीं कहना है। तूझे प्रगट नहीं है, लेकिन अनुभव में आ रहा है। इसलिये तेरे लिये आसान है, देख तो सही, ऐसा कहते हैं। आसान है, ऐसा कहते हैं।

मुमुक्षु :- उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की एकता की अनुभूति .. उसही प्रकार आबालगोपाल को उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की एकता अनुभव में आ रही है।

समाधान :- वह अनुभूति कही वह दूसरी अपेक्षासे कही है। ऐसा आत्मा तूझे दर्शाया, तू देख, तू स्वयं ही है।

प्रश्न :- सिद्धो वर्ण समाम्नाय।

समाधान :- हाँ, सिद्धो वर्ण समाम्नाय। उमराला में बचपन में वह (प्रथम शब्द सुना था)। भगवान वीतराग हुए, राग-द्वेष छूटकर भगवान हुए। वह भगवान बाहर में, आत्मा भगवान अन्दर है। उस भगवान को पहिचाने तो भगवान हो सकता है, पहचाने बिना नहीं हो सकता।

प्रश्न :- माताजी! समवसरण कैसा होता है?

समाधान :- समवसरण में भगवान बिराजते हैं। जो भगवान आत्मा में स्थिर हो गये हों, अन्दर में उनका शरीर भिन्न होता है, उनका आत्मा भिन्न होता है। भगवान बिराजते हों समवसरण में, उनकी वाणी छूटती हो, समवसरण में देव आते हों, मनुष्य आते हों, सभा भरी हो, उसमें रत्नों के गढ़ होते हैं। अनेक प्रकारसे समवसरण अन्दर देवोंने रचना की है, समवसरण में मन्दिर होते हैं, भगवान की भक्ति करने देव, मनुष्य सब आते हैं। भगवान समवसरण में बिराजते हैं।

प्रश्न :- माताजी! भगवान विहार करके दूसरे स्थान में जाये तो वही मनुष्य, तिर्यंच, देव जाते हैं या वहाँ दूसरे आते हैं?

समाधान :- दूसरे गाँव में दूसरे होते हैं, लेकिन जितने साथ में रहनेवाले होते हैं वह सब जाते हैं। जैसे मुनि, गणधर आदि सब साथ में जाते हैं। जिस गाँव के मनुष्य हैं वह सब जाते हैं ऐसा नहीं है, दूसरे गाँव में दूसरे मनुष्य होते हैं। देव जाते हैं, देव जाते हैं। कुछ देव तो साथ ही होते हैं भगवान विहार करे तब। कुछ देव जो विहार में साथ में होते हैं वह सब देव साथ में होते हैं। मुनि, गणधर आदि सब साथ होते हैं। तिर्यंच का नियम नहीं है। उस गाँव के वहाँ होते हैं, दूसरे गाँव में दूसरे होते हैं।

प्रश्न :- ..समवसरण बिखर जाये तब वहाँ के जो मनुष्य और तिर्यंच वहाँ के होते हैं वह सब नीचे ऊतर जाते होंगे, समवसरण बिखर जाये तब? बीस हजार सीढ़ियाँ..

समाधान :- भगवान का ऐसा अतिशय है कि सब एकदम नीचे ऊतर जाते हैं, एकदम चड़ जाते हैं। बुढ़े भी चड़ जाते हैं, बच्चे भी चढ़ जाते हैं, सब एकदम चढ़ जाते हैं और एकदम ऊतर जाते हैं। एकदम बिखर नहीं जाता, सब एकदम ऊतर जाते हैं, वैसे बिखरता है। देव ऐसा नहीं करते हैं।

प्रश्न :- समवसरण एक स्थान में कितने दिन तक रहता है?

समाधान :- उस गाँव के जितने पुण्य होते हैं उतने समय रहता है, उसका नियम नहीं है। शास्त्र में ऐसा आता है कि चार महिने वर्षाऋतु में रहते हैं। जिस गाँव के जितने पुण्य होते हैं उतना समय रहता है। वह सब कुछ निश्चित नहीं होता। भगवान का ऐसा उदय। उनको विकल्प नहीं है। सहज ही गाँव के पुण्य होते हैं तबतक भगवान बिराजते हैं, बाद में विहार करते हैं। एक महिना भी रहे, लेकिन कितने दिन रहे उसका कोई नियम नहीं है।

प्रश्न :- भगवान को चतुरमुख होते हैं या एक मुख है और चारों ओर दिखता है?

समाधान :- भगवान का मुख एक होता है और अतिशयसे चार मुख दिखते हैं। मुख चार नहीं होते। मुख एक होता है लेकिन अतिशयसे चारों ओर दिखता है। सबको ऐसा दिखता है कि भगवान मुझे दिखते हैं। चारों ओरसे भगवान दिखते हैं। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों ओरसे भगवान दिखते हैं। उनका अतिशय ऐसा है। भगवान का समवसरण होता

है, वहाँ सब देव आते हैं, मनुष्य आते हैं, राजा आते हैं। भगवान का पूरा समवसरण भरा हुआ रहता है। जब–जब ध्वनि छूटे तब पूरी सभा हाजिर होती है। रत्न के मन्दिर, रत्न के वृक्ष, सब रत्न का होता है। देवों को आश्चर्य होता है कि यह समवसरण की रचना कैसे हो गई! भगवान के पुण्यसे इसकी रचना होती है। ऐसी शक्ति हमारे में नहीं थी, यह कैसे रचना हो गई! इसप्रकार देवों को आश्चर्य होता है, ऐसे समवसरण की रचना हो जाती है।

प्रश्न :– रचना करनेवाले को आश्चर्य होता है, ऐसी रचना हो जाती है।

समाधान :– ऐसी रचना हो जाती है। ऐसा भगवान का अतिशय है। मन्दिर होते हैं, खाई, भूमि होती है, वृक्ष की भूमि होती है, अनेक प्रकार की भूमि होती है, ध्वजा की भूमि इत्यादि अनेक प्रकार की भूमि, वह सब भूमि और किले को पारकर जाये तब भगवान की गंधकूटी आती है, (जिसमें) भगवान बिराजते हैं।

प्रश्न :– भगवान को केवलज्ञान होते ही बीस हजार हाथ ऊपर चले जाये और बाद में समवसरण की रचना होती है?

समाधान :– हाँ, तुरन्त समवसरण की रचना हो जाती है। भगवान ऊपर चले जाते हैं। देव आकर समवसरण की रचना करते हैं वह तुरन्त रचते हैं। देवों की शक्तिसे तुरन्त रचना करते हैं। भगवान को जहाँ केवलज्ञान हुआ, ज़मीनसे ऊपर चले जाते हैं।

प्रश्न :– सभी केवली के लिये ऐसा है?

समाधान :– केवलज्ञानी सब ऊपर जाते हैं। समवसरण का नक्की नहीं होता। ऊपर जाते हैं। तीर्थंकर तो ऊपर जाते हैं, लेकिन ऊपर सब जाते हैं। देवों को समवसरण की रचना करने में देर नहीं लगती।

प्रश्न :– महावीर भगवान का समवसरण तो भरत में रचा गया था।

समाधान :– हाँ, भरतक्षेत्र में रचना हुई थी, राजगृही नगरी में। इस भरतक्षेत्र में ही महावीर भगवान के समवसरण की रचना राजगृही नगरी में हुई थी। श्रेणिक राजा जहाँ राज करते थे। पहला राजगृही नगरी में रचना हुई, विपुलाचल पर्वत पर। फिर तो भगवानने सब जगह विहार किया।

प्रश्न :– माताजी! अन्य केवली भगवान को तो कुछ सुनने का, समझने का भाव होता नहीं तो फिर वे भी क्यों समवसरण में जाते हैं?

समाधान :– जिन्हें कुछ श्रवण करना नहीं है, समझने का तो भी वह भगवान का समवसरण होता है वहाँ बिराजते हैं। सब केवलज्ञानी भगवान नहीं, लेकिन कुछ तो बिराजते हैं। उनके बिराजमान होने का स्थान समवसरण में बिराजते हैं। बिराजे तो सही न। बिराजते हैं, कितनों को ध्वनि छूटती है, कितनों को ध्वनि का उदय हो तो दूसरे स्थान में जाते हैं। जिनको ध्वनि का उदय नहीं हो तो केवली भगवान कहाँ बिराजते हैं? भगवान के समवसरण

में। सुनना नहीं है, कुछ नहीं है और बिराजते हैं भगवान के समवसरण में। ऐसा भगवान का वैभव है। भगवान के समवसरण में केवलज्ञानी होते हैं, मुनि होते हैं, वह सब भगवान के समवसरण की तीर्थंकर की विभूती है। भगवान के समवसरण में केवलज्ञानी बिराजते हैं, केवलज्ञान प्रप्त करके। जिस केवलज्ञानी को ध्वनि नहीं होती। उदय होता है वह तो दूसरे गाँव जाते हैं वहाँ गंधकूटी की रचना होती है। सब रचना होती है, पीठिका इत्यादि, सभा बैठ सके ऐसी रचना होती है। केवलज्ञानी की भी ध्वनि छूटती है, दूसरे गाँव में जाते हैं वहाँ।

प्रश्न :- भगवान विहार करे तब पादकमल की रचना होती है वह स्वयं ही भगवान के अतिशयसे रचना हो जाती है? भगवान विहार करे तब एक के बाद एक पादकमल नैसर्गिकरूपसे रचना हो जाती है?

समाधान :- देव रचना करते हैं। कमल की रचना देव करते हैं। भगवान जहाँ कदम रखते हैं वहाँ सुवर्ण कमल की रचना देव करते हैं। महावीर भगवान के समवसरण रचना हुई, ध्वनि छूटती नहीं थी। उसप्रकार का था। ध्वनि छूटने का काल था और गौतमस्वामी आये, सब का मेल हो गया। उपादान-निमित्त का।

प्रश्न :- वाणी का योग तीर्थंकर के सिवाय अन्य केवली को भी होता है।

समाधान :- हाँ, होता है, वाणी का योग होता है। होता है, कितनों को नहीं होता है, कितनों को वाणी का योग होता है। शास्त्र में आता है, जहाँ तीर्थंकर भगवान नहीं बिराजते हैं, वहाँ कोई केवलज्ञानी भी बिराजते हैं और उनकी भी वाणी छूटती है। उपदेश की ध्वनि छूटती है।

प्रश्न :- वीतराग होने के बाद राग तो है नहीं, फिर भी ऐसी करुणा..

समाधान :- उसप्रकार का पुण्यबंधन हुआ है कि केवलज्ञान होने के बाद ध्वनि छूटे।

प्रश्न :- गौतमस्वामी अन्दर पधारने के बाद सम्यग्दर्शन हुआ या बाहरसे ही?

समाधान :- वह कुछ नहीं है। मानस्तंभ देखकर आश्चर्यचकित हुए हैं। फिर सम्यग्दर्शन कब प्राप्त हुआ, वह सब अन्दर आने के बाद हुआ है। किस भूमि में और कहाँ तक आये वह कुछ आता नहीं। बाकी मानस्तंभ देखकर आश्चर्यचकित हुआ हैं। वहाँ-से उनकी शुरूआत हो गई है, उनकी परिणति पलटने की शुरूआत वहाँ-से हो गई है। वहाँ जाते हैं तो सब हो गया। सम्यग्दर्शन हो गया, मुनिदशा हो गई, चार ज्ञान हो गये, सब परिणति वहाँ जाते ही पलट जाती है। भगवान के समक्ष गये तो एक क्षण में सब पलट गया। भगवान के दर्शन किये तबसे सब पलट गया। शुरूआत हो गई यहाँ मानस्तंभ के पास।

प्रश्न :- अन्तर पुरुषार्थ ऐसा शुरू हो गया।

समाधान :- अन्तर पुरुषार्थ की परिणति। अन्दर आश्चर्य लग गया। मैं यह सब मानता था वह जूठा है। मैंने तो माना था कि मेरे जैसा कोई नहीं है। मानो मैं तो सर्वज्ञ हूँ,

ऐसी मान्यता हो गई थी। यह तो गलत है। आश्चर्य (हुआ)। अन्दर की इतनी पात्रता है कि उनको आश्चर्य लग गया कि यह है कौन?! ऐसे कैसे महापुरुष हैं! यह भगवान कौन है! ऐसा आश्चर्य लगा। अन्दर की मान्यता थी वह सब बात छूट गई। अन्दरसे एकदम पात्रता जागृत हो गई। परिणति एकदम पलट गई, एकदम पलट गई। सभी आग्रह एकदम छूट गये। मान्यता सब अन्यमत की वेदान्त की थी वह एकदम पलट गई। एकदम पलटकर एकदम सब प्रगट हो गया। आत्मा ऐसा चैतन्य है न, ऐसी पात्रता प्रगट हो गई। एकदम पुरुषार्थ शुरू हो गया।

प्रश्न :- जातिस्मरण हुआ था?

समाधान :- कोई कारण नहीं, भगवान के दर्शनसे सब हो गया है। निमित्त भगवान के दर्शन है और अन्तर में स्वयं का उपादान है।